ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्   विषय- हिन्दी

दिनांक—08/07/2020   **चंद्र गहना से लौटती बेर**

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

चाँद गहना से लौटती बेर

---केदारनाथ अग्रवाल

(भावार्थ)

देख आया चंद्र गहना

....

बैठा अकेला।

कवि एक गाँव से लौट रहे हैं जिसका नाम है चाँद गहना। लौटते समय कवि एक खेत की मेड़ पर अकेले बैठकर गाँव के सौंदर्य को निहार रहे हैं ।

आगे की पंक्तियों में ज्यादातर पौधों की तुलना अलग-अलग वेशभूषा वाले आदमियों से की गई है।

एक बीते के बराबर

....

सजकर खड़ा है।

चने का पौधा ऐसा लग रहा है जैसे एक ठिगना -सा आदमी अपने सर पर छोटे से गुलाबी फूल की पगड़ी बांधकर सज धजकर खड़ा है।

पास ही मिलकर उगी है

....

दूँ हृदय का दान उसको।

अक्सर चने के खेत में ही तीसी या अलसी के बीज भी बो दिये जाते हैं। अलसी ऐसे लग रही है जैसे चने की बगल में हठ कर के खड़ी हो गई हो। अपनी कामिनी काया और लचीली कमर के साथ उसने बालों में नीले फूल लगा रखे हैं। जैसे ये कह रही हो कि जो भी उस फूल को छूएगा उसे ही उसका दिल मिलेगा।

और सरसों की न पूछो

....

प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

सरसों तो लगता है सबसे बड़ी हो गई है। वह इतनी बड़ी हो गई है कि उसने अपने हाथ पीले करवा लिए हैं और

विवाह मंडप में बैठ गई है। ऐसा लग रहा है कि होली के गीत गाता हुआ फागुन का महीना भी उस ब्याह में शामिल हो रहा है। इस स्वयंवर में प्रकृति अपने प्यार का आँचल हिला रही है।

हालांकि यह निर्जन भूमि है, लेकिन लोगों की भीड़ -भाड़ वाले शहर से कहीं ज्यादा प्रेम यहाँ देखने को मिल रहा है।

विशिष्ट बातें-

- यहाँ कवि ने खेतों में लहलहाती विभिन्न प्रकार के फसलों का आकर्षक शब्द चित्र प्रस्तुत किया है।
- चना, अलसी, सरसों और प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।
- ‘फूले फूल’, ‘सबसे सयानी’ में अनुप्रास अलंकार है।
- ‘अनुराग- अंचल’ में रूपक अलंकार है।
- ‘हाथ पीले करना’ यहाँ पर मुहावरे का प्रयोग हुआ है।
- भाषा सरल एवं सहज है

शेष अगली कक्षा में।

छात्र कार्य-:

कविता के भावार्थ को लिखें एवं याद करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”